

अथर्वप्रमाणविधि

आर्य समाज

1914 I

अथरापरागविधि

1914 I

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॐ नमः श्रीकुत्रिकायै ॥ ॥
॥ अथ दीपयागविधिः ॥ दीपयागविधिं वक्ष्ये विसृजे
णयथाविधि ॥ अष्टम्यां च दशम्यां च विशेषशिवरा
त्रके ॥ आद्यौ यज्ञसमारम्भं समस्तवरुणावनं ॥ विना
यज्ञं न कर्तव्यं न दोषो दिनरात्र्याः ॥ पूर्वदिक्सेदेव
स्य देव्या आसन्नं यथा ॥ ॥ स्नानादिनित्यनैमित्तिकं

कृत्वा ॥ ततो देवपंचामृतस्नानं ॥ वन्दनादिपुण्यालंका
रकृत्य ॥ नित्यकर्मकारयेत् ॥ ततो यागमण्डपंगत्वा
प्रातर्विधानेन देवीपूजयेत् ॥ आमंत्रणं कुर्यात् ॥ वाक्यं
॥ आमंत्रितोसियोगिन्याः सगणो गुरुपूर्वकः ॥ पुण्यदु
र्वाक्षतंगृहसौमनस्यं प्रयच्छुमे ॥ योगिन्यादिगणैः स
र्वैः स्वच्छन्दभैरवान्नकः ॥ अथमेष्टक्रमित्यर्थं निमंत्रणं

करोम्यहं ॥ ॥ ततो देव्यायेयजमानेन पुण्यमाजनं स
मर्पयेत् ॥ ॥ अथादि सूर्यार्घ्यं ॥ सिद्धिरतु क्रियारंभे
त्यादि ॥ ॥ योगिन्यादिगणैर्देवार्चनं कार्थं ॥ ॥ सूर्यार्घ्यं
गुरुनमस्कारं ॥ न्यासादिजलपात्रार्घपात्रपूजनं ॥ भूत
शुद्धात्मपूजनं ॥ मालिनीस्तोत्रं ॥ पञ्चवलिप्रदानं ॥
स्तोत्रं ॥ तर्पणं ॥ प्रेतप्रेतइति ॥ शोधनं ॥ पश्चिमक्रमेणः

देवार्चनं समापयेत् ॥ त्वत्तु देवतादिमिश्र ॥ पुनः तर्प
णं ॥ अष्टाविंशति ॥ अग्निन्यासेति ॥ एकानेकेति ॥ अवे
पूर्वगतमिति ॥ ॥ बलिविसर्जनं ॥ पुरुमाणलंदेवैः
समर्पयेत् ॥ इतिकर्माचनं ॥ ॥ तदन्ते वा मुण्डावलिः
॥ पशुयागः ॥ समय ॥ विसर्जनं ॥ इति वा मुण्डावलिः
॥ ॥ अथ कुमारपूजनं ॥ देवयोगिन्यादि आवा

र्यपूजनं ॥ सूर्यार्घ्यं पाश हस्तार्घ्यं चन्दन सिंहरयज्ञो
पवीत पुष्पदक्षिणादानं यजमानाशीर्वाहः ॥ सूर्यसा
क्षी ॥ इतिकुमारीपूजनं ॥ ॥ अथाह्वरात्रिक्रियाः
विधिः ॥ ॥ रात्रियात् समस्तं वस्ये ॥ विश्यापीठेरजः पा
तनं ॥ वक्रं लिखेत् ॥ मध्ये त्रिकोणं षड्कोणं अष्टशृंगं
द्विषोऽंशं ॥ बाह्ये आधारे वक्रं तु वतीशी अष्टपुनर्वह्निः

॥ वास्येवलिदशंविद्या. दसितांगादिहेतुकं ॥ इन्द्रा
यादशमंचैव. वलिंदयाद्विचक्षणाः ॥ एतत्तेवक्रमा
लित्वा. दीपयागस्यमाण्डलं ॥ प्रार्तत्रिकोणमद्येतु. पात्र
दक्षेवभ्रजं ॥ अर्द्धपाकंचवामेस्था. दयेकंचवरुंतथा
॥ खेचरंपूर्वकोणेत्. नैऋत्यांतुभूचरं ॥ जलचरंचवा
यवे. स्वाध्विस्थानेतुशेषरं ॥ सर्वचरुंचव्याधारे. काली

पश्चिमकोणके ॥ तद्वहिर्द्वात्रिंशद्वलिः ॥ ३२ ॥ इन्द्रादि
१० हेतुकादि १० वक्ष्माण्णादि ८ असितांगादि ८ ॥ ॥
पात्रोपरिकांशेस्थात्ती ॥ दीपचरु ॥ मण्डलवामे ॥
पश्चिमवलिः ॥ दक्षेकुम्भसमयान्तं ॥ धत्तेदुवने ॥ ॥
॥ पिंधस ॥ शिवशक्ति ॥ कुम्भयातत्रिकोण. षड्कोण
आसन ॥ अष्टपत्रपद्मंवा ॥ पंचवलिः ॥ योगिन्याया

सनं ॥ अर्द्धपद्मं ॥ वामेवलि दक्षेसमय ॥ धृतेपिंध
स ॥ ॥ वरुसाधनं ॥ गुरुनमस्कारादिदेवार्चनं
॥ ॥ न्यासः ॥ ऐं पद्मं क्रीं क्रीं नमः ॥ वरुभाणशोध
नं ॥ अग्निस्थापनं ॥ पञ्चप्रणवेन साहिततण्डुलपानं ॥
दुग्धघृतशर्करा प्रणवेण दातव्यं ॥ गायत्रीमंत्रेण ज
पः ॥ २७ ॥ वत्तीशि नवात्मा षडंगेन संपूज्य ॥ आवाह

नादि धेनुमुद्रां दर्शयेत् ॥ ऐं पद्मं क्रीं क्रीं नमः ॥ वा
लोर्दनं ॥ धर्मं वनं क्लाने ॥ ॥ इति वरुसाधनं ॥ दीप
ज्जाय ॥ वृत्तिकायथा ॥ वृत्तिः स्वेता तथा पीता कृष्णा वा
नीलमेव वा ॥ रक्तवर्णा तु कर्तव्या रञ्जयेद्दीपवृत्तिका
॥ ॥ रक्तो यथा ॥ छागकुक्कुटमहिष शिवा गृध्रश्चः
कन्यका ॥ अनेनैव तु रक्तेन रंजयेद्दीपवृत्तिका ॥ ऐं प

क्रः अत्राय फट् ॥ स्यात्ती मसुक्षाणां ॥ यवशक्तु नाशर्का
रा ॥ ओषधी. एता. सैधव. जायफल. लवंग. त्रिफला
त्रिकटु. दुग्ध. मधु. अलि. नवद्रव्याणि ॥ वीरडवोणाचाः
लोडनं ॥ सर्वत्रिकोणाकारं ॥ पंचचक्र ॥ अण्डज. पाकः
ज. कश्च. कर्पूर. यद्वरुकिश्चिक्किश्चिद्देयं ॥ धृतेगर्भ ॥
वृत्तिकायां. धृतं निधाय ॥ मध्ये शिवशक्ति ॥ परिवारं

व ॥ इति दीपसाधनविधिः ॥ ॥ स्वेवरादिस्थापनं ॥
वरुभाण्डमसुक्षाणां ॥ ऐं प क्रः अत्राय फट् ॥ एतेन मंत्रेण
सर्वमसुक्षाणां ॥ मध्ये त्रिकोणां विलिख्य ॥ स्वेवरं यथा ॥
मयूरकाककुलिल. टिहिनशरभाधुकाः ॥ स्वेवरं ते समा
कृत्वा स्वेवरं जन्ममुच्चति ॥ ऐं प क्रौं क्रौं क्रौं स्वेवरं स्थाप
यामिनमः ॥ ॥ नृवरं ॥ अश्वधेनुशिवाश्वान. भल्लुकंका

लसंयुतं नूवरं वसमाहुत्वा नूवरं जन्ममुञ्चति ॥ ऐं प
क्रौं क्रौं नूवरं स्थापयामि नमः ॥ ॥ जलवरं ॥ नम
कक्षपशंस्त्वचश्चुसी सर्पश्चमाणुकं ॥ जलवरं समाहु
त्वा जलजन्ममुञ्चति ॥ ऐं प क्रौं क्रौं जलवरं स्थाप
यामि नमः ॥ ॥ शेषरं ॥ लक्ष्म्यादिसमायुक्तं पतला
एव विशेषते ॥ शेषरं ते समाहुत्वा शेषरं जन्ममुञ्च

ति ॥ ऐं प क्रौं क्रौं शेषरं स्थापयामि नमः ॥ ॥ सर्ववरं
॥ अन्नपानरसमिश्रं सर्ववरो नमोस्तुते ॥ सर्ववरं स
माहुत्वा उत्तवीजं प्रमुञ्चते ॥ ऐं प क्रौं क्रौं सर्ववरं
स्थापयामि नमः ॥ ॥ अथ कालिः ॥ शर्करातिलमि
श्रश्च सर्वानन्दकरी स्मृता ॥ कालवश्च न हेतुश्च कालि
कालनमोस्तुते ॥ श्रावधी ॥ त्रिकटुसैन्धवं ॥ ऐं प क्रौं क्रौं

कुं कालिं स्थापयामिनमः ॥ ॥ त्रिवरु ॥ कुकुटाण्डप्रमाने
न. महिषोत्तमसेतजं ॥ पाकजम्बुगमांसनि. मृतमांसन
कारयेत् ॥ ऐं पञ्च उजं स्थापयामिनमः ॥ ॥ एवं पसेतः
जं स्थापयामिनमः ॥ ॥ एवं पङ्कोङ्की कुं पाकजं स्थापय
मिनमः ॥ ॥ ऐं पङ्कोङ्की कुं समयान्नं स्थापयामिनमः
॥ इति स्थापनं ॥ ॥ अथ वर्धन्यां कुम्भ पूरणं ॥ गुरु

णा कुम्भं धत्वा. योगिन्या पूरां ॥ मंत्रस्तु ॥ मूल. विलो
ममातृकां च पठन् ॥ ऐं पञ्च खण्डैः करसानाथ. करे पर
शुधारिणी ॥ त्वच्छन्दस्युराणामन्त्रं. निवेदि कुलरूपि
णी ॥ लाक्षास्सनिभा देवी. पद्मरागसमप्रभा ॥ अष्टा
दशभुजाकर्णा. सर्वीलंकारशोभिता ॥ क्षीरोदमधर्मा
द्रुता. अलिद्वये तथा पुरा ॥ संसारमोहिनी देवी. सृष्टिः

स्थितिनि कारिणी ॥ देवदेव्या सुरन्तोहं रिद्धहंकारमं
जिनी ॥ नयं हित्वा श्रियं दत्वा पातु कादम्बरीश्वरी ॥ त्व
स्थाने स्थापयेत् ॥ इति कुसुमपूरणं ॥ ॥ तदन्ते विद्याया
ठे च रुस्थापनं ॥ विष्णु हं पूर्वकोणोत् नैर्ऋत्यां तु अनाह
तं ॥ मणिपूरं तु वायव्यां स्वाधिस्थानं तु ईशके ॥ आधा
रमग्नि कोणोत् आज्ञां पश्चिम उच्यते ॥ एवं द्वाकारेण चः

रुस्थापनं ॥ ॥ महापात्रलेपनं ॥ चतुश्चमरक्तचन्दन
॥ अलिगंगाजलस्नानं ॥ खेचर्यादिचरुगर्भस्थाप्य ॥ ॥
॥ तदन्ते वहिर्यागः ॥ योगिन्यादित्यश्चरुसुरासमर्पणं
॥ वाक्यं ॥ ऐं प कलिकलुषकृतान्तश्च एतन्मार्त्त एतन्नीमो
रुसखफलकलालीज्ञानसौख्यार्थदाता ॥ त्रिदशवर
तनूनां चक्षरे पद्मसंस्थः ॥ कुसुमजलफलाद्यैस्त्वां कु

लार्घ्यं नमामि ॥ ॥ गुरुनमस्कारः ॥ न्यासादि अर्घ्यात्र
पूजनं ॥ योगिन्यादिभ्यः पादार्घ्यं ॥ ऐं आधारादिकमलासन
पादुकां ॥ अंजलिः ॥ वाक्यं ॥ सुगन्धिवन्दनैर्नैव वीरपादा
र्घ्यमेव च ॥ दिद्ययागर्तकर्म निर्विघ्नं वैवकामया ॥ उल्लास
केन प्रख्यातः पादपूजाममत्कृतं ॥ अद्विसिद्धिं प्रयच्छतु मे
रवाज्ञानुशासने ॥ योगिन्यादिगणाः सर्वे पादार्घ्यं च नमो

नमः ॥ ॥ औषधं ॥ वचाप्रियंगुसुरभी उशीलं वन्दनं त
था ॥ बालमांसी तथा दोल मष्टौषधं तथा समं ॥ ॥ ततो
वीरसंख्या ॥ त्रिपञ्चसप्तनवम मेकादशत्रयोदश ॥ तिः
धिसंख्यादिकं कृत्वा इतरं वनसंख्याया ॥ ॥ आचार्य
स्य वामे पञ्चवलि वारुणी स्थापनं ॥ ॥ वीरपूजनं ॥

सूर्यार्घ्यं पुष्पभाजनसमर्पणं ॥ ऐं प सिद्धिरस्तु क्रियारंभे
इति ॥ स्तोत्रादिकं च ॥ पुष्पभाजनं दातव्यं ॥ ॥ योगिन्या
दिभ्यः ॥ गुरुणा योगिन्यादिगणा पूजनीयः ॥ ॥ अद्यादि
सूर्यार्घ्यं ॥ गुरुनमस्कारपूर्वकं न्यासार्घ्यपात्रात्मपूजा ॥
॥ ॥ ततो पूजनं ॥ करकछपमुद्रया आवाह्य ॥ उत्थाः
याधारवक्रात्मनसितयगता ब्रह्मरन्ध्रे निपाता तानीत्वा

हस्तरोजे स्फटिकस्युटि निभातेजः पुंजे सुदीप्ता ॥ ध्यायन्ती
येन नित्यातदुभयकुलजा स्थूलशूक्ष्मा त्रिमूर्तिः सा देवी
अत्र यागे वहति पुटसमाधाय ते चक्रमध्ये ॥ ॥ आसनं
॥ ऐं प आधाराग्रपुष्टिकासनपादुकां ॥ सिंहासनपादु
कां ॥ पंचश्रेतासनपादुकां ॥ शवासनपादुकां ॥ ह्योत्वा
हावह्निश्रेतासनपादुकां ॥ ह्यो श्रीकुब्जिकापादुकां ॥ ॥

卷一

カ16!

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1311624 1311624 1311624 1311624 1311624

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

... 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ पद्मसिंहासनादेवी, जवाडडिम्बरागिनी ॥ चतुर्भुजरादे
वी, विन्दुकापालधारिणी ॥ वराभयकरेयुक्ता, सर्वार्त्तकार
शोभिता ॥ त्रिनेत्राकुञ्जिकादेवी, ध्यायमाना च योगिनी ॥ ध्या
नपुष्ट्यं नमः ॥ ॥ उपहारसमर्पणं ॥ ॥ वन्दन ॥ ऐं वन्दनाः
यनमः ॥ श्रीखण्डचन्दनं युक्तं गन्धाद्यं सुमनोहरं ॥ आभूः
षितं ललाटाद्यै, वन्दनं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ श्रीवीरभक्त्यासि

दूरत्वाद्वा ॥ वीरेश्वरी महावीरवीर्यस्य विभूषितं ॥ त्रैलोक्य
का कर्षणां देवि, सिंदूरारुणमुत्तमं ॥ ॥ श्रीसर्वजनमो
हयैव यद् ॥ त्रैलोक्यमोहिनी देवी, कज्जलंकृतशेखरं ॥
गुह्यातु परमेशानि, अद्विसिद्धिप्रदायकं ॥ ॥ ह्यो यज्ञोप
वीतायकं ॥ यज्ञोपवीतं परमं ब्रह्मसूत्रप्रतिष्ठितं ॥ प
वित्रं पावनं पुण्यं गुह्यातु परमेश्वरि ॥ ॥ ह्योनानाकुत्रा

लंकारपुष्पाय यौषद् ॥ नानापुष्पसुगन्धानि, मालत्याकु
सुमोदय ॥ सौभाग्यसिद्धिदं नद्रे, पुष्पारोहनमुत्तमं ॥
वत्सवं ॥ नानावत्सविविचित्राणि, सिंदूरारुणाशोभितं ॥ दे
व्यांगं भूषितं श्रेष्ठं, सर्वालंकारशोभितं ॥ ॥ कर्णपताका
॥ कर्णार्थं तु पताकाश्च, कुञ्जिका परमप्रिया ॥ सर्वसौभा
ग्यदां वैव, गुह्यतां परमेश्वरि ॥ ॥ दृष्टि ॥ दृष्टिनेत्रत्रयं वै

व त्रैलोक्येषु सुदुर्लभं ॥ सौभाग्यं वदु रूपं च देहि मे ह
पया सदा ॥ ॥ ततो पूजनं ॥ वज्र वती शि सर हर ॥
ऐ पयां योगिनी पादुकां ॥ षडङ्ग योगिमुद्रां ॥ ये के विद्या
गिनीनां पीठजा क्षेत्रजा सहजा योगजा गर्भजा कुलजाः
सद्यो हजा ये के विद्यागिनीनां खेवरी भूवरी गोवरी एकाक्ष
द्याक्षरी त्र्यक्षरी वतुष्यं वषट्पाष्टनवाक्षरीणां त्रिजगद्वा

सनानां यथोपपन्नं वलिंगं गृह्णन् मम सिद्धिं कुर्वन्तु कृपया
हा ॥ ॥ वरुणात्र समर्पणं ॥ वरुणं गृह्णते वीर सिद्धानाम
नुमोदितं ॥ लोकोपचारनाथाय निर्मलं स्फटिकोपमं ॥ रसा
यनोयं सर्वज्ञं देवदेवैश्च निर्मितं ॥ निष्कलं सकलोत्पन्नं कम
लस्थं नमाम्यहं ॥ ॥ वीरसमर्पणं ॥ गृह्णते वीर उर्मधर्म सि
द्धानामनुमोदितं ॥ ब्रह्मक्षत्रियवाण्डालमेकाकारं नमा

महं ॥ त्वागतं धर्मराजानं मलरागविवर्जितं ॥ दैता दैतवि
निर्मुक्तं तत्तैकं नमति त्वया ॥ ॥ वलि विष ॥ ऐं यां योगि नै
वलिं गृह्ण ॥ ऐं ५ समस्त मन्त्र पीठ सिंहासन पीठे पपी
ठ क्षेत्रोप क्षेत्र सन्दोहोप सन्दोह दिव्य सिद्धि समय वक्रवः
लिं गृह्ण ॥ ऐं ५ उक्ता नुक्तं यत्किञ्चित् सर्वं वलिं गृह्णा
मुक्ता ॥ वलिं गृह्ण महावीर वरुनैवेश साधनं ॥ मोक्षाम

वतु सत्त्वानां निर्मलं स्फटिकोपमं ॥ अन्नं महारसं दिव्यं सर्वं
भूतसदोदितं ॥ निष्कलं सकलोत्पन्नं पद्मपत्रं नमाम्यहं ॥ ॥
॥ धूप दीप जापः ॥ सीत्वाहा ॥ ॥ सिंदूरदक्षिणां तुभ्यम
हं संप्रददे ॥ त्तोत्र ॥ ॥ ऐं ५ सिंदूरवन्दन विलेपित पु
ष्पमाला यज्ञोपवीत वसनां जन धूप दीपं ॥ संपूर्ण पात्रमालि
नामिषमीनयुक्तं ताच्छूलमोदक फलानि शिञ्चनेन ॥ एता

निसर्ववरितापरिपूजितानि देवीकुजाप्रभृतिदेवगणाश्च
सर्वे ॥ संपूजिताफलमिदं श्रियसंपदात्री शान्तिः सदाभवतु
मंगलदेहलक्ष्मी ॥ निर्विघ्नवीरयागन्तु आदिमध्यावसान
तः ॥ अस्माकं पुण्यलोकानां शिवं भवतु सर्वदा ॥ ऐं प या सो
भेदातिभेदोपरमपदकथावंदशैलासनस्था बुद्ध्याविष्णुः
अरुद्रः सकलखगमृगोभूतनित्यस्वरंगे ॥ शक्त्यासाधै सु

शंभुर्धनमृगहरणो वापहस्तेषुवाणः श्यामारक्ता रुणाङ्गीः
प्रणमतिशवरीसिद्धिसौरीशनाथः ॥ ऐं प या देवी कुञ्जिका
ख्या ककुलसकलं मण्डले धण्डिले वा क्षेत्रे पीठे पपीठे सग
गुरुहते योगिनी वीरहन्दे ॥ देवश्री कण्ठनाथो यजनपरि
विधौ दीपयागादिपुण्ये विद्यान्तं शापमुक्तं त्वन्निमतफल
दाराजक्ष्मीप्रदात्री ॥ सिन्दूरपुञ्जसदृशाननवारुनेत्रारक्ता

म्वरासुतशुभानरसुण्डमाला ॥ काश्याहृतशवयुताश्रलिवि
कुहस्तातस्यैनमोस्तुसततंकुलयोगमात्रे ॥ योगिन्याकामरु
पासुदगणानभृतंतप्रकार्तश्ररीनामत्रापंकालमालागलित
गलतलिःरक्तवस्त्रोत्तरीया ॥ लिङ्गपाशंकपालंशृणामपि
विष्टातिसंस्मृतासुप्रसन्नाः प्रक्तानांसाधकानामभिलिखितव
रंश्रेयमानाप्रसन्ना ॥ इच्छाग्यानी ॥ श्यामारक्ता ॥ यथावान

प्रहारेति ॥ अत्रगन्धादि ॥ यथाश्रद्धादक्षिणा ॥ निर्धिघ्नं प्र
यात्तु ॥ सर्वैर्वीरजनेननमत्कारं ॥ ॥ इतियोगिनीपूजाः
विधिः ॥ ॥ पश्चिमदेवतामालकोगणतय ॥ पूजाया
यः आसनः ध्यानः अयांजलिः जपस्तोत्रः वरुपात्रसमर्पण
दक्षिणान्नं ॥ मंत्रथश्रीथश्रीविधिथं सकलसं ॥ ॥
सिद्धिलक्ष्मीः त्रिपुरेश्वरी आदिनमालकोश्रामायदेवता

मालको गणातय ॥ मन्त्रथ वथ वविधिथं ॥ ॥ पंचव
लि पूजा. आसन समंत्र. चरुपात्र समर्पण. दक्षिणान्तं ॥ ॥
॥ जप. स्तोत्रादिकं च ॥ गौर्या पुत्रमिति ॥ ॥ देवसके
पूजाया तवने ॥ गण आदिन पूजाया दुनर्था. आसन. ध्या
न. मूलमंत्र. चरुपात्र समर्पणादि. धूप. दीप. जप स्तोत्र.
दक्षिणान्तं ॥ ॥ अथ शिखानाथ पूजनं ॥ ऐं पञ्चाधा

राशयष्टपुष्टिकासन पादुकां. ॥ दृष्यासन पादुकां. ॥ ध्यानं ॥
यो माकार समप्रक्ष्ण. एकवक्त्राष्टबाहुकं ॥ त्रिनेत्रं दिव्यरु
पाङ्गं. सर्वलंकारशोभितं ॥ त्रिशूलं दिण्डिमं कर्तृ. काशः
अकरदक्षिणो ॥ सूत्रं खट्वांगमुण्डं. विंदुमुद्रां ववामके ॥
मुण्डहाडादिभूषाङ्गं नैरवाभरणं कितं ॥ ज्वलत्केशज्वल
त्सम्भू. ज्वलद्भवतनूरुहं ॥ प्रेतप्रेतस्थितं देवं महदुग्रमया

पहं ॥ एवंरूपं वध्यातवां त्वच्छन्दमैरवेश्वरं ॥ ध्यानपुष्पं नमः
॥ त्र्यंजलिः ॥ अघोरमूल हस्तसर ॥ ऐपत्सुं ह्म्यी ह्म्युं शि
खा त्वच्छन्दमहाभैरवपादुकां ॥ वन्दनादि ॥ ॥ दू पु
ष्यं दद्यात् ॥ षडंगमावाह्य विश्रुत पंचमहासुधा ॥ वरुपात्रत
मर्पणं ॥ ऐपवरुकमिति ॥ धूप दीप दक्षिणार्त्त ॥ वलिः ॥
ऐपजांजीकृ त्वच्छन्दमैरववलिंगं कुरु त्वाहा ॥ जपः ॥ ॥

॥ ह्म्युं त्वाहा ५० ॥ त्रुति ॥ पंचासं श्वेतवर्णं वृषभतनुगतं दक्षि
णे नीलवर्णं वामे रक्तं त्रिनेत्रं कनकसमकरं पश्चिमे भूद
मुक्तं ॥ त्रैश्वर्यं पाशरु त्वभयकजवरं शक्तिषट्पदीजजायां
त्वच्छन्दं श्रीशिवाय शिवपरमकरं नौमि त्वद्वांगदत्तं ॥ पानः
वस्त्रकपालेति ॥ शुद्धशान्तं ॥ अत्रगधादि ॥ दक्षिणा ॥ नि
र्विघ्नं प्रयातु ॥ सर्वैर्वीरजनेन नमस्कारं ॥ ॥ इति श्रीशि

त्वानाथपूजा॥ ॥ इति वीरगणपूजा॥ ॥ अथ यथाशुक्ल
पद्मेशेन देवाञ्चन॥ सूर्यार्घ्यं गुरुनमस्कार॥ मालिनीश्राः
वाहनादि॥ पश्चिमदेवाञ्चनसमापयेत्॥ धूपः दीपः जपः
स्तोत्र॥ तदन्ते वामभागे चन्द्रसूर्यद्वयोः कुम्भपूजनं॥ ऐं
प ह्रस्व सर कुल कुम्भ नहार कालि मूर्ति पादुकाः॥ ॥
ऐं प सिंहसन पादुकाः॥ वस्त्राणादि॥ वज्रमंत्र॥ ऐं प सर

ह्रस्व कुल कुम्भ नहार कालि मूर्ति पादुकाः॥ वलिः॥ षडंगः
मावाद्य॥ जपस्तोत्र॥ विकसितकरपद्मे संस्थिता सिंधु
पात्रेऽश्रुणु रुविररागा काशविशालि पूर्ण॥ परममृतम
ये त्वं दिव्यमानन्दरूपं सुरनरवीरवर्धंतो धिता देवदेवी
॥ ॥ इति श्रीवर्द्धनीपूजनं॥ ॥ आज्ञाप्राथम्यं॥
॥ ऐं प आज्ञाप्रासादं गुरुणां गणयोगवक्त्रे आज्ञाप्रासादः॥

रुद्रमंत्रः ॐ रारिंरैरौह इति षडाक्षरमंत्रः ॐ विंजींजींजीं
जीः इति षडाक्षरमंत्रः ॐ कीं कृष्णये गोविन्दाय कृष्णहरिं व
ध्वभाये स्वाहा इति अष्टादशाक्षरकृष्णमंत्रः ॐ राराधायै
गोविन्दाय नमः महारिं वध्वभाये स्वाहा इति अष्टादशाक्षररा
धामंत्रः ॐ राराधे राधिके राधायै स्पेहं फट स्वाहा इति राधा
मंत्रः ॐ स्वा स्पे मे स्वा मे के गो रे गो र स्वा म क त व रि स्वाहा इ

ति अष्टादशाक्षरस्वाममंत्रः ॐ जीं स्वा माये स्वा म स नु जाये
कृष्णवध्वभाये स्वाहा इति अष्टादशाक्षरस्वाममंत्रः ॐ कीं कृष्ण
ये गोविन्दाय गोपिजवध्वभाये नमः इति अष्टादशाक्षरसदनगोपा
तमंत्रः ॐ गंगो हपाय स्वा माये नित्यपितां वराये स्वाहा इति अष्टा
दशाक्षरगोरस्वाममंत्रः ॐ वृं वं स गोपा ताये भुयाताये नमः
इति अष्टादशाक्षरवंशगोपातमंत्रः ॐ वं वं सि ध रा ये स्वा माये

